काव्य प्रयोजन

हिन्दी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष (पार्ट-3), पत्र- 6

काव्य प्रयोजन का अर्थ है - काव्य रचना का उद्देश्य | प्रत्येक काव्य की रचना के पीछे रचनाकार का कुछ उद्देश्य होता है | पश्चिम के कलावादी विचारकों ने कला को कलाकार की अंतःचेतना और अनुभूति की अचेतन अभिव्यक्ति माना है | इस कारण वे काव्य-कला के किसी प्रयोजन को आवश्यक नहीं मानते हैं |

'प्लेटो' ने काव्य को प्रयोजनहीन तथा जीवन के लिए अनावश्यक माना है | वहीं 'अरस्तु' ने काव्य-कला के प्रयोजन पर विचार करना आवश्यक माना है | इस प्रकार पश्चिम के विचारकों में काव्य के प्रयोजनों को लेकर संशय की स्थिति रही है |

भारतीय काव्य-चिंतन में काव्य प्रयोजन कभी भी विवाद का विषय नहीं रहा है | सभी भारतीय आचार्यों ने एकमत से यह स्वीकार किया है कि साहित्य का सृजन मानव जीवन के उन्नयन के प्रयोजन से प्रेरित होता है | भारतीय विचारकों की यह मान्यता है कि " साहित्य भावक के चित्त का परिष्कार कर उसमें सौंदर्य चेतना जगाकर सुंदरतम् जीवन के निर्माण में सहायक होता है |"

भारतीय साहित्य-शास्त्र की प्रथम उपलब्ध रचना आचार्य 'भरतमुनि' द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' है | आचार्य 'भरतमुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में जिन नाट्य -प्रयोजनों की चर्चा की थी वे काव्य-प्रयोजन के रूप में स्वीकृत हैं |

"धर्म्यं यशस्यमायुष्यम् हितं बुद्धिविवर्धनम् |

लोकोपदेश जननं नाट्यमेतद् भविष्यति || "

अर्थात काव्य का प्रयोजन धन-प्राप्ति, यश-प्राप्ति, आयु-वृद्धि, हित-साधन, बुद्धि-वर्धन और लोकोपदेश है |

आचार्य भामह, आचार्य रूद्रट, आचार्य विश्वनाथ आदि ने चारों पुरुषार्थों को काव्य का प्रयोजन माना है | ये चारों पुरुषार्थ हैं- धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष |

आचार्य 'वामन' ने इनको प्रीति और कीर्ति दो वर्ग में रखते हुए इन्हीं दोनों को काव्य का प्रयोजन स्वीकारा है | यहां प्रीति अर्थात आनंद भावक की दृष्टि से तथा कीर्ति अर्थात यश, धर्म, अर्थ आदि कवि की दृष्टि से काव्य के प्रयोजन है |

आचार्य 'मम्मट' ने काव्य के प्रयोजनों पर विचार करते हुए कहा है -

"काव्यं यशसेडर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये |

सद्य: परनिर्वृतये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे ||"

इस प्रकार उन्होंने काव्य के छह प्रयोजन माने हैं -

(1) यश की प्राप्ति :- निश्चय ही यश की आकांक्षा काव्य रचना का एक प्रमुख कारण है | आचार्य 'मम्मट' के अलावे और भी कई आचार्यों ने इसे स्वीकारा है | फिर भी सबके लिए इसे अनिवार्य प्रयोजन नहीं माना जा सकता | भक्तिकालीन अधिकांश कवियों ने यश का लोग नहीं किया है | कबीर, तुलसी, सूर,जायसी आदि कवियों द्वारा अपने कुल, जाति, जन्म आदि के बारे में उल्लेख न करना इसका प्रमाण है |

(2) अर्थ का लाभ :- काव्य रचना का एक उद्देश्य धन अर्जित करना भी है | आदिकाल के अनेक कवि राजाओं के दरबार में रहते थे और उनको राज्य की ओर से नियमित वृत्ति मिलती थी | मगर यह प्रयोजन भी सबके लिए अनिवार्य रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है | भक्तिकालीन कवियों का प्रयोजन

धनार्जन नहीं था | अकबर के बुलाने पर 'कुंभनदास' कहते हैं - " संतन को कहा सीकरी हों काम / आवत जात पनहिया टूटी बिसरि गयो हरिनाम" |

(3) व्यवहार का ज्ञान :- काव्य का एक प्रमुख प्रयोजन व्यवहार का ज्ञान है जिसका संबंध पाठक या श्रोता से है | कवि अपनी रचनाओं में लोक-व्यवहार के आदर्श रूप का चित्रण करते है, जिसके अध्ययन या श्रवण से पाठक और श्रोता को लोक-व्यवहार का ज्ञान होता है |

(4) अमंगल का नाश :- काव्य मंगल के लिए है और उसका उद्देश्य अमंगल का नाश करना है | काव्य से लोक का कल्याण होता है | 'मयूर कवि' का कुष्ठरोग 'सूर्यशतक' के प्रणयन से दूर हो गया था | बाहुपीड़ा के निवारण के लिए 'तुलसीदास' ने 'हनुमानबाहुक' की रचना की थी |

(5) लोकोत्तर आनंद या शीघ्र रसोत्पत्ति :- आचार्य 'मम्मट' ने काव्य का पांचवा उद्देश्य शीघ्र रसोत्पत्ति या लोकोत्तर आनंद की प्राप्ति माना है | साहित्य के अनुशीलन से मानव के अंतःकरण का जो साधारणीकरण होता है वही रस उत्पत्ति का मुख्य कारण और काव्य का चरम लक्ष्य होता है | सभी रसवादी आचार्य रसानुभूति को काव्य का चरम लक्ष्य स्वीकार करते हैं |

(6) कान्तासम्मित उपदेश :- काव्य में जो उपदेश दिया जाता है वह कांता की कोमल मृदु-वाणी के समान उपदेश परख होती है | शास्त्रों में उद्देश्य-शैली तीन प्रकार की बतलाई गई है - प्रभुसम्मित , सुहृदसम्मित तथा कांतासम्मित |

इनमें से कांतासम्मित उपदेश में प्रधानता शब्दार्थ की न होकर रस की होती है | पत्नी अपने पति को अनर्थ से बचाने के लिए हृदय की समस्त मधुरता उड़ेल कर अपने व्याख्यान को रसशिक्त बनाती है जिससे मानव हृदय उस ओर सहज हीं प्रवृत्त हो जाता है |

निष्कर्षत: हम पाते हैं कि भारतीय काव्य-चिंतन में समय-समय पर आचार्यों

के द्वारा काव्य-प्रयोजनों पर विचार किया गया है | आधुनिक काल में भी अनेक आचार्यों ने अपने-अपने मत प्रकट किए हैं इनमें आचार्य 'मम्मट' के द्वारा प्रतिपादित काव्य के छह प्रयोजन प्रायः मान्य है |

(आवश्यक निर्देश- छात्र-छात्राओं को निर्देशित किया जाता है कि यह पाठ्य सामग्री प्रश्नोत्तर नहीं है केवल पाठ-परिचय मात्र है। छात्र स्वयं इसे विस्तारित कर अध्ययन करें व इसी तरह से अन्य पाठों का भी भली प्रकार अध्ययन कर पाठ के केंद्रीय भाव को समझें। उससे संबंधित प्रश्न-उत्तरों का अभ्यास करते रहें। विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त पाठ्य-सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं। जिसका अध्ययन छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।)

- डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय ।